ओडिशा राज्य का बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम – एक मूल्यांकन अध्ययन

लता पाण्डे*

नि:शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का अधिकार कानून–2009 छह से चौदह वर्ष के सभी बच्चों को गुणवत्तापरक शिक्षा देने की संस्तुति करता है। वर्ष–2002 से देशभर में लागू सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत 6-14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए नि:शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया था। इस अभियान के परिणामस्वरूप नामांकन में तो वृद्धि हो गई थी लेकिन विद्यार्थियों का उपलब्धि स्तर संतोषजनक नहीं था। इसलिए सर्वशिक्षा अभियान में भी गुणवत्ता वृद्धि पर बल दिया गया। गुणवत्तापरक शिक्षा की बात करनी तभी सार्थक और संभव है, जब उसका जुड़ाव मातृभाषा से ही हो यानि कि अच्छी शिक्षा की शुरुआत मातृभाषा से ही संभव है। मातृभाषा में मज़बूत पकड़ होना प्रभावशाली शिक्षा और कई भाषाओं में उच्च स्तरीय निपुणता को भी सुनिश्चित करता है। राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हुए विभिन्न शोध भी शिक्षण का माध्यम मातृभाषा होने के सकारात्मक परिणाम सिद्ध करते हैं।

थॉमस एवं कॉलियर, 1997 के शोध के परिणाम के अनुसार – *जो बच्चे अपनी मातृभाषा में निपुण होते हैं वह अन्य भाषाओं में निपुणता प्राप्त कर लेते* हैं। बेकर, 2001 तथा हेग, 2003 भी मातृभाषा में शिक्षण के महत्त्व को स्वीकार करते हैं – *मातृभाषा में परिवेश के उदाहरण देते हुए पढ़ाए जाने पर बच्चे बेहतर प्रदर्शन करते हैं।*

शिक्षण का माध्यम मातृभाषा किए जाने की संस्तुति सभी शिक्षा आयोगों में की गई है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा– 2005 भी अध्याय 3 में मातृभाषा में शिक्षा देने की संस्तुति करती है। नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार कानून–2009 भी संस्तुति करता है–शिक्षा का माध्यम जहाँ तक संभव हो, बच्चे की मातृभाषा हो। भारतीय संविधान की धारा 21ए, 29 (1), 46 तथा 360 भी मातृभाषा में शिक्षण दिए जाने पर बल देती है।

सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत गुणवत्तापरक शिक्षा देने के उद्देश्य से सभी राज्यों में कुछ गुणवत्ता पहल कार्यक्रम (क्वालिटी इनिशिऐटिव्स) आरंभ किए गए। उड़ीसा का बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम भी इन्हीं में से एक है। उड़ीसा आदिवासी बहुल राज्य है। सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत किए गए प्रयासों के फलस्वरूप

**प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली - 110016

यहाँ विद्यालयों में नामांकन में वृद्धि हो गई थी। लेकिन उपलब्धि स्तर में वृद्धि नहीं हो पा रही थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि प्रदेश में आदिवासी बच्चों की संख्या काफ़ी अधिक थी। शिक्षा का माध्यम उड़िया (राज्य की भाषा) होने के कारण आदिवासी बच्चों को विषय समझने में कठिनाई होती थी। विद्यालय की समझ न आने वाली अनजानी भाषा का बोझ लादे इन बच्चों को असफ़लता का सामना करना पड़ रहा था। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत वर्ष 2006-2007 में उड़ीसा सरकार द्वारा राज्य के आठ ज़िलों– गजपति, रायगढ़, कंदमाल, मयूरभंज, क्योंझर, मलकानगिरी, संबलपुर, सुंदरगढ़ के 545 विद्यालयों में दस भाषाओं में – सौरा, कुवि सौरा, कुई, मुंडा, संथाली, बोंडा, कोया, किसान, ओरम, मुंडा में बहुभाषी शिक्षा (Multilingual Education) कार्यक्रम चलाया गया। इस कार्यक्रम के लक्ष्य हैं –

- आदिवासी बच्चों के लिए समता तथा गुणवत्तापरक शिक्षा सुनिश्चित करना।
- प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षण का माध्यम मातृभाषा द्वारा बच्चों के सीखने में सुधार लाना।
- बच्चों में पठन और लेखन कौशल का विकास करना।
- बच्चों में अपनी भाषा तथा संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना का विकास करना।
- आदिवासी बच्चों में आत्मसम्मान की भावना का विकास करना।

बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित ज़िलों में पहली कक्षा में मातृभाषा (शिक्षा का माध्यम), दूसरी कक्षा में राज्य की भाषा (उड़िया) तथा तीसरी कक्षा के बच्चों को अंग्रेज़ी भी पढ़ाई जा रही है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. को देश में सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत चल रहे गुणवत्तापरक कार्यक्रमों के मूल्यांकन अध्ययन का दायित्व सौंपा गया। इसी के अंतर्गत उड़ीसा का बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम भी एक था।

तालिका 1

ज़िला	भाषा	विद्यालय संख्या 2007-08	विद्यालय संख्या 2008-09	प्रथम और द्वितीय चरण में कुल विद्यालय	विद्यालय जो शामिल किए गए 2009-10	तीनों चरणों के कुल विद्यालयों की संख्या
		चरण-1	***चरण-2***		***चरण-3***	
गजपति	सौरा	20	20	40	20	60
क्योंझर	जुआंग	10	10	20	10	30
मयूरभंज	मुंडा	10	10	20	15	35
	संथाली	-	100	100	-	100

मलकानगिरी	बोंडा	5	5	10	-	10
	कोया	20	20	40	-	40
संबलपुर	किसान	19	12	31	09	40
सुंदरगढ़	ओरम	20	20	40	12	52
	मुंडा	10	10	20	13	33
रायगढ़	सौरा	-	10	10	10	20
	कुवि	20	20	40	25	65
कंदमाल	कुई	20	20	40	20	60
कुल	10	154	257	411	134	545

अध्ययन के उद्देश्य

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा उड़ीसा में चलाए जा रहे बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के अध्ययन हेतु उद्देश्य निर्धारित किए गए जो इस प्रकार हैं –

1. उड़ीसा राज्य में बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन को समझना।
2. बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के लाभ की प्राप्ति में सहायक विशेष विधियों/तरीकों की पहचान करना।
3. बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन के फलस्वरूप विद्यार्थियों की उपलब्धि को सुनिश्चित करना।
4. बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के अन्य उद्देश्यों की संपप्राप्ति का आकलन करना।
5. इस कार्यक्रम की अनियोजित उपलब्धियों का आकलन।

इस उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तीन मूल्यांकन प्रश्न निर्धारित किए गए –

1. क्या उड़ीसा राज्य में बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम का क्रियान्वयन योजना के अनुसार हुआ? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?
2. बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के निर्धारित उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त किए गए ?
3. बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम की अनियोजित उपलब्धियाँ क्या हैं?

उपरोक्त मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर की प्राप्ति के लिए मिश्रित विधि (mixed method approach) अपनायी गई। जिसके लिए विभिन्न उपकरण विकसित किए गए, जिनका विवरण इस प्रकार है -

उपकरण – अध्ययन हेतु विभिन्न पणधारकों (Stakeholders) से आँकड़े एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित प्रपत्र बनाए गए –

उपकरण	उत्तरदाता
प्रश्नावली	अध्यापक
विद्यार्थी रिकॉर्ड तथा साक्षात्कार प्रपत्र	विद्यार्थी
स्कूल रिकॉर्ड तथा प्रपत्र	

साक्षात्कार प्रपत्र	अध्यापक, मुख्य अध्यापक, सी.आर.सी.सी./ बी.आर.सी.सी./ राज्य परियोजना निदेशक, सर्व शिक्षा अभियान निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., राज्य समन्वयक, अभिभावक, समुदाय सदस्य, ग्राम शिक्षा समिति
कक्षा अवलोकन प्रपत्र	
पाठ्यपुस्तक विश्लेषण हेतु रेटिंग स्केल	विषय विशेषज्ञ
शिक्षक प्रशिक्षण मैन्यूअल के विश्लेषण के लिए चैकलिस्ट	विषय विशेषज्ञ
भाषा और गणित का उपलब्धि टेस्ट (मौखिक और लिखित)	विद्यार्थी
फ़ोकस समूह चर्चा	समुदाय
फ़ील्ड नोट्स	क्षेत्र निरीक्षक/सुपरवाइज़र

उपरोक्त उपकरणों के आधार पर 200 विद्यालयों से आँकड़े एकत्रित किए गए जिनमें 100 विद्यालय ऐसे थे जहाँ बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम क्रियान्वित था, तथा 100 विद्यालय ऐसे थे जिनमें बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम नहीं लागू था।

तालिका 2

Sampling / नमूने						
ज़िला	**भाषा**	**ब्लॉक**	**कुल विद्यालय चरण-I,II,III**	**चरण – I**	**चरण – II**	**तुलना समूह**
गजपति	सौरा	2	60	5/20	05/20	10
रायगढ़	कुवि	3	65	5/20	5/20	10
	सौरा		20	...	…	...
कंदमाल	कुई	5	60	5/20	5/20	10
मयूरभंज	मुंडा	2	35	5/20	05/10	10
	संथाली	19	100	...	10/100	10
क्योंझर	बोंडा	2	30	5/10	5/10	10
मलकानगिरी	कोया	1	10	5/5	5/5	10
		3	40	5/20	5/20	10
संबलपुर	किसान	6	40	5/19	5/11	10
सुंदरगढ़	ओरम	4	52	5/20	5/20	10
	मुंडा		33	...	...	...
8 ज़िले	10 भाषाएँ	47	545	45	55	100

इस अध्ययन की विशेषता यह रही कि इस कार्यक्रम मूल्यांकन में उड़ीसा राज्य की बराबरी की सहभागिता रही। इसमें उड़ीसा प्राइमरी एजुकेशन अथॉरिटी (OPEPA) भुवनेश्वर तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधानऔर प्रशिक्षण परिषद्, भुवनेश्वर के संकाय सदस्य भी सम्मिलित थे। इन संकाय सदस्यों के अतिरिक्त कार्यक्रम मूल्यांकन के कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने तथा समय पर समाप्त करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर एक-एक अनुसंधान अधिकारी, आठ ज़िलों के लिए (जहाँ बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम चल रहा था) आठ समन्वयक,दस सुपरवाइज़र (प्रत्येक भाषा के लिए एक सुपरवाइज़र) तथा साठ क्षेत्र निरीक्षकों की नियुक्ति की गई। क्षेत्र समन्वयकों, सुपरवाइज़र्स तथा क्षेत्र निरीक्षकों के लिए बारीपदा, रायगढ़ तथा संबलपुर में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रत्येक उपकरण के एक-एक बिंदु पर विस्तृत चर्चा की गई। उपकरण का चयनित विद्यालयों (जो कि अध्ययन में शामिल नहीं थे) में क्षेत्र परीक्षण किया गया ताकि किसी भी प्रकार की कठिनाई हो तो उसे वहीं दूर किया जाए। इन सबकी सहायता से आठ ज़िलों से विभिन्न पणधारकों (stakeholder) से आँकड़े एकत्रित किए गए।

डेटा प्रोसेसिंग तथा विश्लेषण की प्रक्रिया के चरण –

- गुणात्मक आँकड़ों (Quantitative data) के विश्लेषण के लिए SPSS का उपयोग किया गया।
- गुणवत्तापरक उत्तरों के लिए –
  - आँकड़ों को श्रेणीबद्ध किया गया।
  - प्रत्येक उपकरण में उपयोगी बिंदु के लिए कोड बुक विकसित की गयी।
  - कोडबुक के आधार पर आँकड़ों को कोड करके compile किया गया।
  - Verbatim quotes की पहचान की गयी।

आँकड़े कुल 1757 विद्यार्थियों, 364 शिक्षक, 200 मुख्य अध्यापक, 534 समुदाय के सदस्य, 95 प्रशासक तथा 396 कक्षाओं का अवलोकन कर एकत्रित किए गए।

निष्कर्ष

मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार रहे –

मूल्यांकन प्रश्न 1. क्या बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम (MLE) का क्रियान्वयन योजना के अनुसार हुआ?

इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रश्नावलियों में निम्नलिखित बिंदु रखे गए –

1. पाठ्यचर्या तथा सामग्री विकास
2. शिक्षक प्रशिक्षण
3. सामुदायिक सहभागिता
4. मॉनीटरिंग तथा इवेल्यूएशन
5. बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम (MLE) के प्रति जागरूकता
6. विद्यालयी सुविधाएँ
7. शिक्षक अभ्यास (Teacher Practice)

1. पाठ्यचर्या तथा सामग्री विकास

- पाठ्यपुस्तक तथा अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री के विकास में बड़ी संख्या में शिक्षक, विद्यार्थी तथा समुदाय के सदस्य सम्मिलित थे।

- 60 % से अधिक शिक्षकों के अनुसार सामग्री की पाठ्यक्रम से अनुरूपता पाई गई।
- अधिकांश शिक्षकों ने सामग्री की गुणवत्ता के संबंध में संतोष व्यक्त किया।
- विषय विशेषज्ञों के अनुसार भी पाठ्यसामग्री बहुभाषी शिक्षा (MLE) के उद्देश्यों के अनुसार विकसित हैं।
- पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु विद्यार्थियों की आयु तथा आदिवासी संस्कृति के अनुरूप तथा विद्यार्थियों की आयु तथा स्तर के अनुकूल है।
- पाठ्यपुस्तक तथा शिक्षण अधिगम सामग्री अधिकतर विद्यालयों में उपलब्ध थी। शिक्षकों तथा विद्यार्थियों द्वारा सामग्री रुचिकर तथा उपयोगी पाई गई।
- सामग्री का पर्याप्त समय पर तथा पर्याप्त मात्रा में विद्यालय में पहुँचना भी पाया गया।
- अधिकांश बहुभाषी शिक्षा विद्यालयों में एक आदिवासी शिक्षक नियुक्त है लेकिन सभी का मत था कि सभी कक्षाओं को पढ़ाने के लिए केवल एक शिक्षक की नियुक्ति पर्याप्त नहीं है।

2. शिक्षक प्रशिक्षण

- अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रमों से संतुष्ट थे। उनके अनुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप था।
- 60 % शिक्षकों के अनुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि पर्याप्त थी।
- कुई, कुवि, किसान तथा ओरम भाषा के कुछ शिक्षकों के अनुसार प्रशिक्षण में सिखायी गई बातों को व्यावहारिक रूप में कक्षा में लागू करना संभव नहीं है।

3. सामुदायिक सहभागिता

- 60 % मुख्य अध्यापकों के अनुसार समुदाय के लोग विद्यालयी गतिविधियों में सहयोग करते हैं।
- संथाली भाषा के विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य सभी में सामग्री विकास तथा सांस्कृतिक म्यूज़ियम की स्थापना में सामुदायिक सहभागिता काफ़ी अधिक थी।
- 60 % समुदाय के सदस्य कक्षायी गतिविधियों में रुचि लेते हैं।

4. मॉनीटरिंग तथा इवेल्यूएशन

- कुई तथा ओरम भाषा के विद्यालयों में (60 % तथा 70 %) मुख्य अध्यापकों के अनुसार MLE को लागू करने में उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।
- मुख्य अध्यापक बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए विद्यार्थी, शिक्षक, ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों से बातचीत करते हैं, कक्षागत गतिविधियों तथा पाठ योजना को देखते हैं।
- बी.आर.सी.सी. तथा सी.आर.सी.सी द्वारा प्रदत्त अकादमिक सहयोग तथा मॉनीटरिंग के स्तर में विभिन्न ज़िलों में भिन्नता थी।
- मुख्य अध्यापकों के अनुसार शिक्षकों को बिग बुक तथा स्मॉल बुक के लिए पाठ योजना बनाने में दिक्कत हो रही है।
- कई मुख्याध्यापकों की राय थी कि विद्यालयों में

इस कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए अधिक अकादमिक सहयोग की आवश्यकता है।

- सौरा, कुवि, संथाली तथा ओरम भाषा के विद्यालयों के शिक्षकों को छोड़कर अन्य भाषाओं के विद्यालयों के शिक्षकों के अनुसार उनके विद्यालयों के भौतिक मूलभूत संसाधनों की भी मॉनीटरिंग की जाती है।

5. बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के प्रति जागरूकता

- अधिकतर पणधारक बहुभाषी शिक्षा तथा इसके उद्देश्यों से परिचित थे।
- कई शिक्षक इस कार्यक्रम से संबंधित कई मुद्दों से अवगत नहीं थे।
- राज्य के वरिष्ठ अधिकारी बहुभाषा शिक्षा नीति तथा आवश्यकता से भली-भाँति परिचित थे।

6. विद्यालयी सुविधाएँ

- एकेडेमिक सपोर्ट सुविधाओं जैसे - लर्निंग कॉर्नर,वॉल हैंगिंग/मैगज़ीन, पुस्तकालय तथा प्ले सामग्री भी विद्यालयों में भिन्न-भिन्न रूप में पायी गई।
- कई विद्यालयों में चारदीवारी, खेल का मैदान तथा रैम्प्स नहीं थे।
- सर्व शिक्षा अभियान लागू होने के बाद भी कई विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं जैसे-जल, शौचालय, बिजली का अभाव है।

7. शिक्षकों द्वारा अपनाई गई विधियाँ

- शिक्षकों द्वारा कक्षा में सीखने-सिखाने के दौरान अपनायी गई विधियाँ –
  - क्रिया-कलाप आधारिण शिक्षण
  - सरल से कठिन के क्रम में योजनाबद्ध तरीके से पढ़ाना
  - बड़ी और छोटी बुक का प्रयोग
  - मातृभाषा द्वारा सीखना-सिखाना
  - बच्चों के अनुभवों के आधार पर सिखाना
  - शिक्षकों द्वारा सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग
  - व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक विद्यार्थी पर ध्यान देना।
  - 80% विद्यार्थियों के अनुसार शिक्षक प्रोत्साहित करते हैं तथा दंड नहीं देते हैं।

8. समतापरक गुणवत्ता शिक्षा

- यद्यपि शिक्षक समतापरक शिक्षा की संकल्पना से परिचित थे लेकिन अधिकांश शिक्षकों की राय थी कि सेवारत् प्रशिक्षण कार्यक्रम में समतापरक गुणवत्ता शिक्षा पर अधिक चर्चा नहीं की गई।
- आँकड़े दर्शाते हैं कि यद्यपि लड़कियों की अपेक्षा लड़के विद्यालय आने में अधिक रुचि दिखाते हैं लेकिन लड़कों को पढ़ाई में सहायता की अधिक आवश्यकता होती है।

मूल्यांकन प्रश्न -2 बहुभाषी शिक्षा कर्तव्य के निर्धारित उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया?

- आदिवासी बच्चों के सीखने की उपलब्धि में वृद्धि
- आदिवासी बच्चों के नामांकन में वृद्धि
- आदिवासी बच्चों के आत्मसम्मान में वृद्धि

बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम का विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव –

- मूल्यांकन अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि विद्यालय जहाँ बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम क्रियान्वित हैं, के विद्यार्थियों की उपलब्धि उन विद्यार्थियों की तुलना में अच्छी रही जहाँ कि बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम लागू नहीं था।
- सभी भाषाओं (केवल बोंडा और कोया को छोड़कर) में बहुभाषी शिक्षा विद्यालयों के विद्यार्थियों का मौखिक तथा लिखित दोनों भाषाओं में प्रदर्शन उन विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर रहा जो उन विद्यालयों में पढ़ते थे, जहाँ बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम लागू नहीं था।
- बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के कुछ अन्य सकारात्मक परिणाम रहे– विद्यार्थियों के आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान में वृद्धि, विद्यार्थियों की विद्यालय आने में रुचि तथा सीखने में प्रतिभागिता, आदिवासी बोली/भाषा के उपयोग में वृद्धि।
- विद्यार्थियों के नामांकन तथा स्कूल में बने रहने में वृद्धि, शाला त्याग की दर में कमी भी बहुभाषी शिक्षा विद्यालयों में देखी गई।

1. विद्यार्थियों की उपलब्धि के संबंध में/विभिन्न पणधारकों का दृष्टिकोण भी सकारात्मक रहा।

- मुख्य अध्यापकों के अनुसार बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के सकारात्मक परिणाम –
  - विद्यार्थियों के आत्मसम्मान तथा आत्मविश्वास में वृद्धि
  - विद्यार्थियों में विभिन्न भाषायी कौशलों का विकास
  - विद्यार्थियों द्वारा मातृभाषा का प्रयोग
  - विद्यार्थियों की अपने सहपाठियों से घनिष्ठता
  - विद्यार्थियों द्वारा मातृभाषा से उड़िया में तथा उड़िया से मातृभाषा में अत्यंत सहजता से वार्तालाप करना।

2. आदिवासी बच्चों का नामांकन तथा ठहराव

- सभी दस आदिवासी भाषाओं के विद्यालयों में ठहराव में वृद्धि
- सी.आर.सी.सी. तथा बी.आर.सी.सी. के अनुसार बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम के लागू होने के बाद विद्यार्थियों के नामांकन के साथ ठहराव में वृद्धि हुई।

3. विद्यार्थियों के आत्मसम्मान में वृद्धि

- 95 % शिक्षकों की राय थी कि बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम की गतिविधियों से विद्यार्थियों के आत्मसम्मान में वृद्धि हुई।

मूल्यांकन प्रश्न-3 कार्यक्रम के अनियोजित परिणाम क्या हैं?

1. सकारात्मक अनियोजित परिणाम

- शिक्षक विद्यार्थियों के संबंधों में सुधार
- विद्यार्थियों की सीखने के प्रति उत्सुकता में वृद्धि
- विद्यार्थी स्वयं सीखने के लिए प्रेरित

2. नकारात्मक अनियोजित परिणाम

- पहली कक्षा में मातृभाषा (आदिवासी) शिक्षा का माध्यम होने के कारण उड़िया भाषी बच्चों द्वारा विद्यालय त्याग।

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की कम प्रतिभागिता 22

उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर उड़ीसा के आठ ज़िलों में लागू बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम (MLE) के संबंध में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संस्तुतियाँ दी गईं ताकि कार्यक्रम को और भी सुचारू रूप से चलाया जा सके।

संस्तुतियाँ

- बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम को उड़ीसा के अन्य ज़िलों में लागू किया जाए तथा इसे पाँचवी कक्षा तक कर दिया जाए।
- समुदाय की प्रतिभागिता को भी और बढ़ाया जाए।
- विद्यालयों में सामग्री की समय पर तथा पर्याप्त मात्रा में उपलब्धि।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान की प्रशिक्षण सामग्री की समय पर तथा पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम की अवधि में बढ़ोतरी।
- समतापरक गुणवत्ता शिक्षा के मुद्दे में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान संबोधित करना।
- पाठ योजना तथा कक्षा प्रबंधन जैसे विषयों पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान अधिक ध्यान देना।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों का फॉलो-अप।
- बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रमों के लिए अतिरिक्त विशेष स्थानीय शिक्षकों की नियुक्ति।
- विद्यालयों में कार्यक्रम के सुचारू संचालन के लिए मॉनीटरिंग समिति का गठन।

संदर्भ

1. एन.सी.ई.आर.टी. 2005. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
2. प्रोग्राम इवेल्यूएशन रिपोर्ट मल्टीलिंग्वल एजुकेशन 2011, उड़ीसा www.ssatcfund.org
3. शिक्षा का अधिकार कानून-2009, भारत सरकार

❑❑❑